“Beti Bachao Beti Padhao” जैसी पहल के लिए धन्यवाद. समाज ने कम से कम यह महसूस करना शुरू कर दिया है कि लड़कियों के लिए उनके समग्र विकास के लिए शिक्षा तक पहुंच होना कितना महत्वपूर्ण है। सही कौशल और ज्ञान के साथ शिक्षित महिलाएं समाज में सामाजिक-आर्थिक बदलाव लाने की शक्ति रखती हैं।

यहाँ हमारे पास अलग-अलग शब्दों की सीमाओं के साथ हिंदी में लंबे और छोटे बेटी बचाओ बेटी पढाओ पर निबंध और भाषण हैं जो व्यापक रूप से लिखे गए हैं और समझने में आसान हैं।

Beti Bachao Beti Padhao Essay in Hindi (250 Words)

मनुस्मृति में लिखा है – “यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता“

जहां महिलाओं का सम्मान होता है, वहां भगवान का वास होता है। लेकिन वर्तमान में, ऐसा कुछ भी नहीं लगता है।

माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 22 जनवरी, 2015 को हरियाणा के पानीपत में बेटियों को समर्पित एक अभियान शुरू किया। उन्होंने इसे “बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ” अभियान कहा।

हरियाणा में लिंगानुपात की 2011 की जनगणना के अनुसार, 1000 लड़कों पर 879 लड़कियां हैं, जो बेटियों की दयनीय स्थिति को दर्शाती है, यह अभियान हरियाणा राज्य से शुरू किया गया था।

हमारे देश में पुरुषों की तुलना में महिलाओं की संख्या कम हो रही है। 0-6 वर्ष की आयु के बीच, वर्ष 1961 से 1000 लड़कों के अनुपात में लड़कियों की संख्या

लगातार घट रही है। वर्ष 1991 में लड़कियों की संख्या 945 थी और 2001 में यह घटकर 927 हो गई और 2011 में यह 918 हो गई।

कम लिंगानुपात वाले 100 जिलों में यह अभियान शुरू किया गया है। "बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ" अभियान के मुख्य उद्देश्यों में कन्या भ्रूण हत्या का उन्मूलन, बालिका साक्षरता का स्तर बढ़ाना, लैंगिक भेदभाव और जागरूकता अभियान के पूर्वाग्रह पर अंकुश लगाना शामिल है। साथ ही, इसके उद्देश्य में बालिका पोषण और स्वास्थ्य स्तर में सुधार, लड़कियों को आगे बढ़ने के अवसर और सुरक्षित वातावरण प्रदान करना आदि भी शामिल हैं।

अगर देश की बेटियां सुरक्षित और शिक्षित नहीं होंगी, तो देश और समाज की हालत नहीं बदलेगी। यह केवल एक सरकारी योजना नहीं है, बल्कि देश के प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है।

यदि हम आज सतर्क नहीं हुए तो हम न केवल अपनी पीढ़ी के लिए बल्कि अगली पीढ़ी के लिए भी भयानक संकट को आमंत्रित करेंगे।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ निबंध (350 Words)

यह अभियान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा देश में लड़कियों की सुरक्षा और संरक्षण से संबंधित है। यह योजना उस समय की तत्काल आवश्यकता थी क्योंकि देश की महिलाओं की बचत और सशक्तीकरण के बिना विकास संभव नहीं है।

महिलाएं देश की आधी आबादी को कवर करती हैं, इसलिए वे देश की आधी शक्ति हैं। इसलिए, उन्हें भारत के विकास में योगदान करने के लिए समान अधिकारों, सुविधाओं और अवसरों की आवश्यकता है।

यह योजना भविष्य में संरक्षण और बेहतर शिक्षा के बारे में है, जो माता-पिता पर बहुत अधिक भार डाले बिना है।

इस अभियान “Beti Bachao Beti Padhao” का समर्थन करने के लिए, भारत सरकार ने सुकन्या समृद्धि योजना के रूप में एक और कार्यक्रम शुरू किया है। इस योजना में कम उम्र में माता-पिता का बोझ कम करना शामिल है। क्योंकि, इस योजना के अनुसार, माता-पिता को मासिक आधार पर कुछ पैसे बैंक में जमा करने होते हैं, जिसके लिए उन्हें अपने बालिकाओं के भविष्य में लाभ मिलेगा, चाहे वह शिक्षा के लिए हो या विवाह के लिए।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ, सरकार का यह महत्वाकांक्षी दृष्टिकोण निश्चित रूप से भारत में महिलाओं की स्थिति में सकारात्मक बदलाव लाएगा। यह सरकार द्वारा योजनाबद्ध उद्देश्यों, रणनीतियों और कार्य योजनाओं के साथ शुरू किया गया है ताकि यह वास्तव में प्रभावी हो सके।

यह दलित लड़कियों के जीवन को बचाने और उन्हें उच्च शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए है ताकि उन्हें सशक्त बनाया जा सके और सभी कार्य क्षेत्रों में भाग लिया जा सके।

इस अभियान के अनुसार, पहली आवश्यक कार्रवाई के लिए, समाज में लैंगिक भेदभाव के बारे में जागरूकता पैदा करके लड़कियों के कल्याण में सुधार के लिए लगभग 100 जिलों (कम CSR वाले) का चयन किया गया है।

इस Beti Bachao Beti Padhao अभियान का समर्थन पूरी तरह से लड़की की समस्या को हल नहीं कर सकता है, इसे भारत के सभी नागरिकों द्वारा समर्थित करने की आवश्यकता है।

लड़कियों के खिलाफ अपराधों को कम करने के लिए बनाए गए नियमों और विनियमों का कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए और उल्लंघन करने वालों को सख्त सजा दी जानी चाहिए।

Beti Bachao Beti Padhao Essay in Hindi

मेरे प्यारे दोस्तों, जैसा कि हम सभी भारतीय समाज में लड़कियों और महिलाओं के खिलाफ किए गए सभी अपराधों से अच्छी तरह परिचित हैं। बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना समाज में बिना किसी लिंग भेद के सामान्य जीवन जीने के लिए उनके और उनके जन्म-अधिकारों का समर्थन करने के लिए है।

यह अभियान बाल लिंगानुपात की प्रवृत्ति को खत्म करने के लिए महत्वपूर्ण था, जो देश में कई दशकों से लगातार कम हुआ है।

0-6 वर्ष की आयु की लड़कियों की संख्या 1991 में 945 प्रति 1000 लड़के , 2001 में 927 प्रति 1000 लड़के और 2011 में 918 प्रति 1000 लड़के थी। यह भारत सरकार के लिए एक चिंताजनक संकेत था।

यह योजना घटती हुई लड़कियों की संख्या के संबंध में उस चिंताजनक संकेत का परिणाम थी। बाल लिंग अनुपात जन्म से पहले भेदभाव, लिंग चयन और उन्मूलन, जन्म के बाद के भेदभाव, अपराध आदि के कारण था।

इस मुद्दे को हल करने के लिए भारत सरकार द्वारा 22 जनवरी 2015 को बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना शुरू की गई है। देश में लड़कियों की घटती संख्या एक राष्ट्रीय अभियान है जिसे 100 चयनित जिलों के मुख्य लक्ष्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए शुरू किया गया है, विशेष रूप से देश भर में कम सीएसआर में।

यह स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय और महिला और बाल विकास मंत्रालय द्वारा समर्थित एक संयुक्त पहल है।

Beti Bachao Beti Padhao अभियान का मुख्य लक्ष्य पूरे भारत में बालिकाओं को बचाना और लड़कियों को शिक्षित करना है। अन्य उद्देश्य लिंग-चयनात्मक गर्भपात को समाप्त कर रहे हैं और लड़कियों के अस्तित्व और सुरक्षा को सुनिश्चित करते हैं। यह उन्हें एक उचित शिक्षा और सुरक्षित जीवन पाने के लिए सक्षम करना है।

लगभग 100 जिले, जो लिंग अनुपात में कम हैं (2011 की जनगणना के अनुसार), इस अभियान के बेहतर और सकारात्मक प्रभाव के लिए चुने गए हैं।

इस योजना की प्रभावशीलता के लिए विभिन्न रणनीतियों की आवश्यकता है। इसमें लड़कियों के मूल्यों और उनकी शिक्षा के बारे में सामाजिक गतिशीलता और तेज संचार की आवश्यकता है। कम सीएसआर वाले जिलों को पहले से बेहतर स्थिति में सुधार करने के लिए लक्षित किया जाना चाहिए। इस सामाजिक परिवर्तन के लिए सभी नागरिकों, विशेषकर युवाओं और महिलाओं के समूहों से जागरूकता, सराहना और समर्थन की आवश्यकता है।

यह राष्ट्रव्यापी अभियान लड़कियों को बचाने और शिक्षित करने के लिए जनता के बीच जागरूकता बढ़ाने के लिए शुरू किया गया है। इस अभियान का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि लड़कियों का जन्म, शिक्षा, पोषण, बिना भेदभाव के हो।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना की मुख्य विशेषताएं

बालिकाओं की सुरक्षा

भारत जैसे देश में, हम अक्सर कन्या भ्रूण हत्या के बारे में पढ़ते हैं। बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना भारत सरकार द्वारा इस तरह की अमानवीय प्रथाओं को रोकने और बालिकाओं की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए एक बेहतरीन कदम है।

शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देना

बेटी बचाओ बेटी पढाओ की सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक यह सुनिश्चित करना है कि देश की हर लड़की की शिक्षा तक पहुंच हो। एक देश केवल तभी विकसित और समृद्ध हो सकता है जब पुरुष और महिला दोनों शिक्षित हों।

लिंग अनुपात में सुधार

यह योजना दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड राज्यों में बाल लिंग अनुपात में सुधार के उद्देश्य से शुरू की गई थी। भ्रूण हत्या को गैरकानूनी माना जाता है और जो लोग ऐसा करते हैं उनके खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाती है। यह योजना ऐसी प्रथाओं पर नजर रखने में मदद करती है क्योंकि किसी देश की सफलता को उसकी महिला नागरिकों के जीवन की गुणवत्ता से मापा जाता है।

“जब लड़कियों को शिक्षित किया जाता है, तो उनके देश अधिक मजबूत और समृद्ध हो जाते हैं” -मिशेल ओबामा

बाल विवाह रोकने के लिए

बाल विवाह भारत में लड़कियों के खिलाफ क्रूर प्रथाओं में से एक है और कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें समाज से पूरी तरह से धोया जाना चाहिए। 10 वर्ष से कम उम्र की लड़की को ऐसे व्यक्ति से शादी करने के लिए मजबूर किया जाता है जो उससे बड़ा होता है।

बाल विवाह से मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न होता है और ऐसी लड़कियां अक्सर घरेलू हिंसा का भी शिकार होती हैं। बेटी बचाओ बेटी पढाओ ने बाल विवाह को रोकने और लैंगिक समानता को काफी हद तक बढ़ावा देने में मदद की है।

लिंग समानता को बढ़ावा देना

बेटी बचाओ बेटी पढाओ लैंगिक समानता को बढ़ावा देता है। कई दशकों से, भारत में महिलाओं को व्यक्तिगत और पेशेवर दोनों मोर्चे पर बहुत भेदभाव का सामना करना पड़ रहा था। इस पहल के माध्यम से, ऐसे मामलों की संख्या कम हो गई है।

Beti Bachao Beti Padhao Speech in Hindi

सभी को सुप्रभात। मैं तुम्हारा नाम हूँ। मैं इस अवसर पर बेटी बचाओ बेटी पढाओ योजना के विषय पर भाषण देना चाहूंगा।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ पूरे भारत में लड़कियों को बचाने और लड़कियों को शिक्षित करने के लिए एक प्रभावी अभियान है। यह भारत सरकार द्वारा भारत की लड़कियों के लिए कल्याणकारी सेवाओं की दक्षता में सुधार लाने के साथ-साथ जागरूकता फैलाने के उद्देश्य से चलाई गई योजना है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ योजना के तहत सुकन्या समृद्धि योजना (21 जनवरी, 2015 को लॉन्च) की शुरुआत की है। इस योजना का समर्थन करने के लिए, सुकन्या समृद्धि योजना को स्वास्थ्य, उच्च शिक्षा, और विवाह जैसी बालिकाओं के आवश्यक खर्चों को पूरा करके इसे सफल बनाने के लिए शुरू किया गया था।

यह योजना बालिकाओं के जीवन के लिए एक अच्छी शुरुआत है क्योंकि इसमें भारत सरकार के कुछ प्रभावी प्रयास शामिल हैं। यह अब तक की सबसे अच्छी

योजना है क्योंकि यह माता-पिता के तनाव को कम करता है और साथ ही वर्तमान और भविष्य में जन्म लेने वाली लड़कियों के जीवन को वार्षिक आधार पर इस छोटे से निवेश के माध्यम से बचाता है।

यह परियोजना 100 करोड़ रुपये की प्रारंभिक राशि के साथ शुरू की गई थी। यह बताया गया है कि भारत के प्रमुख शहरों में महिलाओं की सुरक्षा को आश्वस्त करने के लिए, गृह मंत्रालय इस योजना पर लगभग 150 करोड़ रुपये खर्च करेगा।

2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में लड़कियों (आयु समूह 0-6 वर्ष) की संख्या 2011 में प्रति 1000 लड़कों पर 918 लड़कियां थी। इसके बारे में 2012 में, यूनिसेफ ने 195 देशों में भारत को 41 वें स्थान पर रखा था।

लड़कियों की संख्या में इतनी बड़ी गिरावट देश में महिलाओं के सशक्तिकरण में कमी का संकेत थी। लड़कियों की संख्या में यह भारी कमी जन्म से पहले भेदभाव, लिंग-पक्षपाती लिंग चयन, जन्म के बाद लिंग असमानता, महिलाओं के खिलाफ अपराध आदि के कारण थी।

इस योजना के शुभारंभ पर, श्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और कन्याओं की बेहतरी के लिए बेटियों को बचाने के लिए कहा।

नरेंद्र मोदी जी द्वारा 22 जनवरी, 2015 को अभियान शुरू किया गया था। इसकी शुरुआत सबसे पहले हरियाणा के पानीपत से हुई थी। देश में गिरते लिंगानुपात की प्रवृत्ति ने इस कार्यक्रम की आवश्यकता को जन्म दिया है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ योजना के उद्देश्य हैं :

o लड़कियों की उत्तरजीविता, सुरक्षा और उच्च शिक्षा सुनिश्चित करना।

o उच्च शिक्षा के माध्यम से महिलाओं के सशक्तिकरण और सभी कार्य क्षेत्रों में समान भागीदारी सुनिश्चित करना।

o लिंग भेदभाव को रोकने के लिए, लडकियों के जन्म से पूर्व लिंग जांच को समाप्त करना।

o सभी लड़कियों की स्थिति में वृद्धि, विशेष रूप से भारत में शीर्ष 100 चयनित जिलों (जो CSR में कम हैं) में।

o स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, महिला और बाल विकास मंत्रालय और मानव संसाधन विकास मंत्रालय मिलकर लड़कियों के कल्याण के लिए काम करते हैं।

आप सभी को धन्यवाद।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पर भाषण – Beti Bachao Beti Padhao Speech in Hindi

[अभिवादन] आज, अभियान ने हमें अपनी बेटियों की स्थिति में सुधार करने में मदद की है, लेकिन यह अभी भी पर्याप्त नहीं है। यह मन के लिए एक बड़ी पीड़ा है कि जिस देश की एक महान संस्कृति है, देश की महान परंपराएं हैं, शास्त्रों में सबसे अच्छी चीजें हैं, वेदों से लेकर विवेकानंद तक।

लेकिन क्या कारण है, कौन सी बुराई घर कर गई है? आज हमारे ही घर में हमारी बेटियां सुरक्षित नहीं हैं, हमें समझना होगा।

मेरी नजर में किसी भी समाज के लिए कोई दर्द नहीं हो सकता। और कई दशकों से विकृत मानसिकता के कारण, गलत सोच के कारण, हमने सामाजिक कुरीतियों के कारण बेटियों के बलिदान का रास्ता चुना है। यह सुनना बहुत दर्दनाक है कि आज समाज में बेटियों की संख्या बेटों की तुलना में बहुत कम है।

जब ऐसी स्थिति पैदा होती है, तो हम समाज की दुर्दशा की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं। समाज का चक्र पुरुष और महिला की समानता से चलता है, समाज की गतिविधि बढ़ती है। बेटा-बेटी, दोनों बराबर हैं। यदि हम इस भावना पर चलते हैं, तो हम आने वाले वर्षों में बेटियों की स्थिति में सुधार कर सकते हैं।

Beti Bachao Beti Padhao, हम सभी को एक जन आंदोलन करना होगा। हर घर से यह आवाज उठनी चाहिए कि हमें बेटी चाहिए। इस देश की सभी राज्य सरकारों को इसके लिए अपने-अपने राज्यों में एक सामाजिक आंदोलन बनाने की आवश्यकता है।

बेटी बचाओ बेटी पढाओ अभियान का कुछ ही वर्षों में अच्छा परिणाम मिला है, लोगों की सोच बदली है। हरियाणा जैसे राज्य में, जहां बेटियों की संख्या में भारी कमी आई है, स्थिति में बहुत सुधार हुआ है, उम्मीद है कि यह अभियान इतनी जोर से चल रहा है और भविष्य में और अच्छे परिणाम सामने आएंगे।

हमें खुद से पूछना होगा कि हम क्या कर रहे हैं, क्या यह सही है? समाज की पुरानी सोच कि बेटी बोझ है, खत्म होने की जरूरत है। आज की हर घटना के रूप में सोच यह दिखाती है कि बेटी बोझ नहीं है, बेटी ही एकमात्र है जिसके पास पूरे परिवार का सम्मान है।

हमें अपनी बेटियों पर गर्व है जब हमें महसूस होता है कि भारत की बेटी अंतरिक्ष की यात्रा पूरी करके लौट आई है। हमें अपनी बेटियों पर गर्व है जब सुनते हैं कि हमारी बेटियों ने ओलंपिक में पदक जीते हैं।

समाज में ऐसे लोग भी हैं जो मानते हैं कि एक बेटा है, यह बुढ़ापे में हमारी सेवा करेगा, लेकिन आज स्थिति अलग है। हम एक ऐसे परिवार को देखते हैं जहां बेटे अपने बूढ़े माता-पिता को बुढ़ापे में छोड़ देते हैं। आज, एक बेटी अपने बूढ़े माता-पिता की सेवा के लिए भी शादी नहीं करती है, अपने माता-पिता के रोजगार में मदद करती है।

हम ऐसे समाज को देखना चाहते हैं, जहां पूरे मोहल्ले में मिठाई बांटी जाए, बेटी पैदा होने पर जश्न मनाया जाए।

बेटी को पढ़ाने के संकल्प के साथ, मैं अपनी आवाज़ को यहाँ विराम देता हूँ, बहुत-बहुत धन्यवाद!